OM - 18 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 11/29/2021 11:31 AM Page 2

भाव और भावना की सूक्ष्मता को समझें

कहते हैं 'जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी' हमारे भाव जीवन में कितने महत्वपूर्ण हैं। भाव हमारे भाग्य का निर्माण करता है। बिना भाव के जीवन ही नहीं। तो आज हम अपने जीवन में भाव और भावना की सूक्ष्मता को समझने का प्रयास करते हैं।

भाव जीवन धुरी का महत्वपूर्ण आधार है। भाव से जुड़े शब्द हम हर पहलू पर उपयोग करते हैं। मेरा कहने का 'भाव' ये था, ये नहीं, मेरा भाव आपके प्रति सदा स्नेह का हो, प्रेम-भाव सदा रखना, हमारे बीच में प्रेम भाव बना रहे। देखो, हर वक्त हम इस भाव को केन्द्र में रख व्यवहार करते हैं। सम्पर्क में आते हैं, बिना भाव के सम्बंध नहीं हो सकते। सबसे उत्तम 'भाव' है आत्मिक भाव। आत्मिक भाव-वास्तविकता से जुड़ा हुआ है। मनुष्य-मनुष्य के बीच का रिश्ता 'आत्म-भाव' का होना चाहिए। देह भाव से परे होने से ही 'आत्मिक भाव' का निर्माण होता है। आत्मिक भाव का आधार सत्यता, निःस्वार्थता पर है। उसी के नाते से हम एकता के सूत्र को मज़बूत कर सकते हैं। हमारा जैसा भाव हम रखते हैं वैसा ही व्यवहार हमारा होता है। शब्द भले कभी ऊपर-नीचे हो जायें किन्तु भाव शुद्ध है, पवित्र है तो सामने वाले को चुभता नहीं है, क्योंकि हमारी आत्मिक ऊर्जा वास्तविक है, ट्रुथ है, सत्य है। इसलिए किसी को खराब नहीं लगता।

भाव हमारे किए हुए कर्म के आधार से निर्माण होता है। हमारा पास्ट में किया हुआ कर्म, सम्बंध, सम्पर्क जैसा भी रहा है, उसी की ऊर्जा के रूप में भाव बनता है। यानी कि हमारी नियती का निर्माण होता है। जैसी नियती वैसी ही मन के भाव की ऊर्जा होती है, शक्ति होती है। इस तरह से देखें तो भाव हमारे पूर्व के किये सोच व कर्म का संचयन है। कलेक्टिव फोर्स है। तब ही तो परमात्मा कहते हैं, हमेशा हरेक के प्रति आत्मिक भाव रखें। ताकि आपके व्यवहार में आने वाले कर्म श्रेष्ठ व शुद्ध बनें। इसका मतलब यही है कि शुद्ध, पवित्र ऊर्जा वाले 'भाव' निर्मित होते हैं, नियती शुद्ध बनती है।

दूसरी तरफ 'भावना'। भावना हमारे फ्यूचर का निर्माण करती है, जबकि भाव हमारे पास्ट का पोस्टमार्टम करते हैं। यानी कि हम कह सकते हैं कि हिसाब-किताब चुक्तू होता है। लेन-देन नैचुरल बनाने की तकनीक का नाम है - 'भाव'। जबकि 'भावना' हमारे भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कहते हैं ना, शुभ सोचो, शुभ भाव रखो। ऐसा क्यों कहते हैं? क्योंकि शुभ-भाव रखना माना अच्छे भविष्य के बीज बोना। भविष्य में मलाईदार फसल प्राप्त करना।

चाहे आपके पास कुछ भी न हो लेकिन सदा स्वयं या दूसरों के प्रति शुभ-भावना रखते हैं तो आप श्रेष्ठ भविष्य का निर्माण करते हैं। कहते हैं ना, भगवान भी शुभ भावना का भूखा है। श्रेष्ठ भावना आपके उच्च तकदीर का निर्माण करती है। श्रेष्ठ भाव-भावना से भगवान को भी अपना बना सकते हैं। तब तो कहते हैं शुद्ध रहो, शुभ सोचो, श्रेष्ठ पाओ।

संसार के खेल का केन्द्र ही भाव और भावना पर आधारित है। किस नज़रिये से हम हर घटना को देखते हैं, उसके बारे में किस भाव से सोचते हैं, वो ही सुख-दुःख का आधार बनता है। परमात्मा का निर्देश ही है हरेक के प्रति शुद्ध-आत्मिक भाव में रहो और श्रेष्ठ भावना रखो। इस तरह भाव और भावना के बैलेंस से भगवान की ब्लेसिंग के पात्र बनते हैं।

बहुतकाल का अभ्यास ही अन्त में काम आयेगा

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

ज्वालामुखी माना मास्टर सर्वशक्तिवान की अथॉरिटी में रहना। न रूहरूहान, न मनन, न सोल कॉन्सेस की स्मृति बार-बार हो, मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ लेकिन उस स्वरूप में ऑलमाइटी अथॉरिटी के सर्वशक्तियों का बीजरूप हो करके लाइट हाउस बन करके रहना। जब आप लाइट हाउस बनेंगे तो उसमें यह विचार नहीं चलेंगे कि मैं लाइट हूँ, मैं लाइट दे रहा हूँ, नहीं, लाइट हाउस का काम ही है लाइट देना। ज्वालामुखी का अर्थ है - एकदम लाइट हाउस, माइट हाउस... मेरे में लाइट भी है, माइट भी है, सर्वशक्तियां भी हैं। वो अथॉरिटी वाली स्टेज और उसमें स्थित होने से ऑटोमेटिकली विश्व की आत्माओं के प्रति वो लाइट और माइट जाती रहेगी। सर्वशक्तियों की लाइट-माइट जो है, उसी स्थिति में स्वरूप बन जायें, उस सीट पर सेट हो जायें तो ज्वालामुखी स्थिति हो जायेगी। बाकी सब जो भी याद करने के तरीके हैं वो भी याद की ही स्टेजस हैं, लेकिन वो पॉवरफुल है ज्वालामुखी की स्टेज, जिसमें बाबा कहते हैं संस्कारों का भी संस्कार कर सकते हैं।

तो ज्वालामुखी स्थिति तब आपकी हो सकती है जब बार-बार आप चेक करो, इस लाइट-माइट हाउस के स्वरूप की स्मृति में हूँ? अपना लिंक चेक करते रहो, अगर बार-बार लिंक टूटता रहेगा तो फिर कितना भी आप जोड़ लो लेकिन गिरी हुई चीज़ में ताकत कम हो जाती है। जैसे रस्सी मानो टूट गई उसको हम जोड़ लेते हैं लेकिन उसकी ताकत तो कम हो जाती है। टूटने-जोड़ने में ताकत कम हो जाती है इसलिए मुझ आत्मा का परमात्मा से लिंक सदैव जुटा रहे। लिंक टूटा तो शक्ति कैसे आयेगी? शक्ति नहीं मिलेगी तो निर्बल हो जायेंगे फिर माया का वार होता रहेगा। इसलिए बाबा ने अटेन्शन खिंचवाया कि लिंक को चेक करो। दूसरा अपनी लीकेज को भी चेक करो, लीकेज है वेस्ट थॉट और वेस्ट टाइम। चलो वेस्ट नहीं किया लेकिन बेस्ट कितना किया? बीच-बीच में लीकेज होता रहा तो खाली हो जायेंगे इसलिए एक लीकेज चेक करो, दूसरा लिंक जोड़ो। तो ज्वालामुखी बनने के लिए ये दोनों बातें चेक करते रहो। अगर दोनों ही बातें ठीक हैं तो फिर ज्वालामुखी स्थिति में स्थित हो सकेंगे।

जो भी करना है वो बहुतकाल का अभ्यास करो क्योंकि यह बहुतकाल का अभ्यास ही अन्त में काम आयेगा। सभी चाहते हैं हम 8 घंटा याद में रहें लेकिन बीच-बीच में किसी न किसी रूप में रूकावटें आती हैं। कोई चाहते नहीं हैं फिर भी ऐसा क्यों होता है? क्योंकि बहुतकाल की विस्मृति का संस्कार खींचता है। 63 जन्म विस्मृति के संस्कार रहे हैं ना। बहुतकाल अगर स्मृति में रहने का अभ्यास नहीं होगा, तो पास कैसे होंगे? अन्त मते सो गति क्या होगी? बहुतकाल का अभ्यास बहुत ज़रूरी है। बहुतकाल को अण्डरलाइन करो तो तीव्र पुरुषार्थ होगा, बल मिलेगा। डायरेक्शन अनुसार चेकिंग के साथ चेंज़िंग भी होती रहे, तो आत्मा चार्ज होती रहेगी, चियरफुल रहेंगे। बाबा की श्रीमत पर पूरा फॉलो करते रहो।

अतीन्द्रिय सुख में रहना है तो सदा खुशी की बातें स्मृति में रखो

● अतीन्द्रिय सुख

राजयोगिनी दादी जानकी जी

नुमाशाम का टाइम योग में बैठने का टाइम है परन्तु अभी साइलेंस में बैठे साइलेंस की ही बातें करेंगे। जब बाबा शब्द कहते हैं तो क्या याद आता है? बाबा का प्यार, दृष्टि। बाबा की दृष्टि से प्यार का अनुभव होता है। बाबा के बोल से समझ मिल जाती है तो बुद्धि खुल जाती है।

बाबा से क्या मिला है? पालना, पढ़ाई और प्राप्ति। वो हमारा न सिर्फ बाबा है, पर मात-पिता, पालनहार है इसलिए बाबा बच्चों को कहते हैं कि तुम सिर्फ बेफिक्र रहना सीखो। बच्चा माना बेफिक्र। बाबा शिक्षा भी तो बेफिक्र रहने के लिए दे रहा है क्योंकि बच्चे को कोई फिक्र होता है तो वो पढ़ाई अच्छी रीति नहीं पढ़ सकते हैं। बाबा का बच्चा बनने से ही स्टूडेंट लाइफ हो गई।

शिवबाबा ने आते ही रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा, अब यज्ञ सम्भालेगा कौन? ब्रह्मा बाबा से समर्पण कराया तो वास्तव में ब्रह्मा जयन्ती भी हो गई, तो हम ब्राह्मणों की जयन्ती भी हो गई। तो पहले किसकी जयन्ती? तो हम पहले बाबा की जयन्ती मना रहे हैं। बाबा हमारी मना रहे हैं। सारे कल्प में परमात्मा को बाबा कहने वाले हम बच्चे ही हैं। जब हम देवता होंगे तो क्या करेंगे? इतना दूर देश का रहने वाला बाबा खास हमारे लिए भारत में आया, हमारे लिए यज्ञ रचा, यज्ञ से हम बच्चों की पालना हुई। यज्ञ सेवा करके हम ब्राह्मण बन गये। अगर हम ब्रह्मा मुख से ज्ञान सुनके ब्राह्मण नहीं बनते, तो यज्ञ सेवा नहीं कर सकते। जिसके मन में युद्ध चलती है तो उसकी सेवा में दिल नहीं लगती और जिसको चिंता, ममता रहती है उनकी दिल भी सेवा में नहीं लगती। कोई कुछ भी किसी तरह की भी यज्ञ सेवा न करे सिर्फ यज्ञ से खाता रहे, उसको यज्ञ के ब्रह्माभोजन की ताकत नहीं मिलती है। ब्राह्मण और सेवा न करे, तो वास्तव में वो लाइफ ही नहीं है। सारे कल्प में ब्राह्मण लाइफ बहुत श्रेष्ठ लाइफ है।

जो अतीन्द्रिय सुख में रहते हैं उनके पास दुःख का नाम निशान भी नहीं रहेगा। संगमयुग है, बाबा के बच्चे हैं, ब्रह्ममुख वंशावली ब्राह्मण हैं, स्वदर्शन चक्रधारी हैं, कल्प पहले वाले हैं, थे, हैं और होंगे। ऐसी ऐसी खुशी की बातों को स्मृति में रखेंगे तो अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे।

विजय माला में आना है तो अपना पेपर आपेही लो

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हरेक अपने आप से पूछो कि हम कौन हैं? हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं? हम राजयोगी हैं? हम विश्व सेवाधारी, वर्ल्ड सर्वेन्ट हैं? हम सो ब्राह्मण सो पूज्य देवता हैं? हम फालो फादर करने वाले हैं? हम बेहद के त्यागी, सन्यासी हैं? हम राजऋषि, तपस्वी हैं? तो हमारी डयूटी क्या है अथवा हमारी ज़िम्मेवारी क्या है? स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना। इस समय बाबा का हमारे लिए क्या इशारा है? और हमारे पढ़ाई का अन्तिम पेपर क्या है? विद ऑनर्स पास होना और कर्मातीत बनना। हमारे पेपर की रिज़ल्ट है विजय माला के विजयी रत्न बनना। फिर भी आता है- हम कौन हैं? हम हैं परमपिता परमात्मा की डायरेक्ट सन्तान। हमारा परिवार क्या है? भाई-भाई या बहन-भाई यह सारा हमारा ईश्वरीय परिवार है।

तो इस तरह से हमारे पढ़ाई की क्या-क्या सब्जेक्ट्स हैं, उन सब सब्जेक्ट्स को चेक करो कि हमारी बुद्धि में ज्ञान की सब प्वाइंट्स बराबर धारण हैं जो कोई भी टाइम कोई भी बात का हम ज्ञान युक्त जवाब दे सकें? 2. हमारे योग की स्टेज क्या है? 3. हमारे पास सब शक्तियों की रिज़ल्ट क्या है? 4. हमारे में वैल्यूज़ कितनी हैं? और बाकी हमारे में कमज़ोरी किस चीज़ की है? 5. हम नष्टोमोहा कहाँ तक बने हैं? 6. हम मायाजीत, जगतजीत, विजयी रत्न कहाँ तक बने हैं? 7. हमारा ड्रामा पर और खुद पर फेथ कहाँ तक है? ऐसे अनेक सवाल हम अपने आपसे पूछ सकते हैं और उसी से अपना चार्ट चेक कर सकते हैं। जैसे पेपर होता है वैसे हरेक बात का खुद ही खुद से क्वेश्चन निकाल उनका जवाब लिखो। तो अपने चार्ट का खुद ही जवाब आयेगा।

फिर देखो कि हम ऑलराउण्ड नम्बरवन हैं या नम्बर टू हैं? अगर अभी हमारा पेपर हो तो हम कहाँ तक उन सबमें पास हो सकते हैं! समझो निर्भयता का पेपर आता है तो हम निर्भय हैं या डरपोक हैं? ऐसा ही फिर कोई देह अभिमान का पेपर आता है तो हम देही अभिमानी रह सकते हैं या नहीं? क्योंकि देह अभिमान हमें नीचे ले आयेगा। तो ऐसा कोई समय आता जो सत्यता का जवाब देना पड़ता है परन्तु डर के कारण सत्य नहीं बोल सकते हैं, झूठ बोल देते हैं। तो कारण है डरना या कारण हुआ देह अभिमान। बाबा ने कहा है - अब मुक्ति वर्ष मनाओ तो मुक्ति के लिए हमें इन सभी पेपर्स में पास होना है तब मुक्ति मिलेगी। तो यह है खुद ही खुद से मेहनत करना, चेक करना और विजयी बनना।

प्यूरिटी की सब्जेक्ट में मन्सा अर्थात् दृष्टि, वृत्ति और फिर वाचा, सम्पर्क-सम्बन्ध, संकल्प-विकल्प यह सब कहाँ तक यथार्थ हैं? इसमें पहले अपने आपको मार्क्स दो। वाचा और कर्मणा इन सबमें हम कहाँ तक फुल मार्क्स ले सकते हैं? और स्वयं ही साक्षी हो देखो कि हम कहाँ तक उसमें विजयी हैं? ऐसे अनेक प्वाइंट्स हैं।

जैसे ड्रामा पर हम सदा ही अडोल रहते हैं? जो होता सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा... जिससे हमारी स्थिति हर परिस्थिति में अडोल रहती है? दूसरों को भी देखते तो लगता इसका भी ड्रामा में यह पार्ट है, खेल है। उन सब खेलों को देख खिलाड़ी बन हम साक्षी स्थिति में कहाँ तक रहते हैं? या मुझे नफरत, घृणा होती है या रहम, दया की भावना रहती है? कहते तो हैं शुभ भावना, सद्भावना, तो ऐसी भावना है? जिसको दूसरे शब्दों में कहते हैं शुभ दुआयें हैं? शुभ भावना माना ही शुभ दुआयें। ऐसी कई प्वाइंट्स अपने आप में मनन करो और अपने आपको चेक करके अपना पेपर तैयार करो। फिर चेक करो कि विजयी माला की क्या विशेषतायें हैं और उन विशेषताओं को हमने कहाँ तक जीवन में लाया है।

यदि हमारी अवस्था अच्छी है तो दूसरे को तीर सहज लग सकता है। हमारी अवस्था का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। जैसे दूध कितना स्वच्छ होता है, उसमें ज़रा-सा भी दही या नींबू का एक बूंद भी अगर डालो तो दूध फट जायेगा। तो वास्तव में हम आत्मायें भी इतनी ही स्वच्छ हैं, उसमें थोड़ा भी कोई दोष होता तो उसका असर अच्छी स्थिति पर फौरन पड़ता है इसलिए हम बहुत-बहुत स्वच्छ आत्मा हैं। हम दूध से भी प्योर हैं। हमें किसी के संग के दोष में आना तो दूसरी बात है परन्तु संग का रंग टच भी नहीं हो। इसकी सबको बहुत सम्भाल रखनी है।